SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ के गाँधीः पं. सुंदरलाल शर्मा

सीमा पाल, पी.–एचडी., इतिहास अध्ययन शाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सीमा पाल, पी.–एचडी.
E-mail : seemapal2016@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/06/2025
Revised on : 26/08/2025
Accepted on : 04/09/2025
Overall Similarity : 00% on 27/08/2025

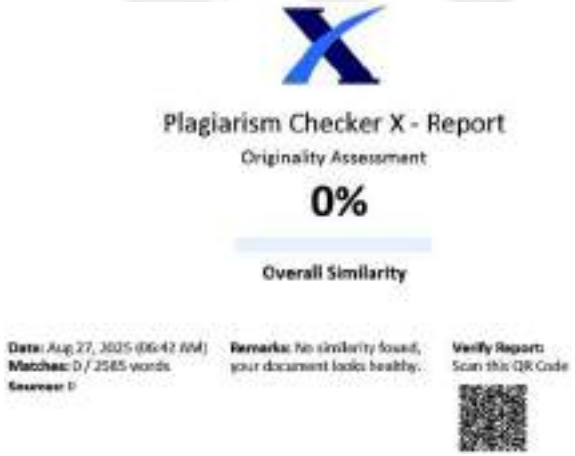

शोध सार

छत्तीसगढ़ के महान सपूतों में पं. सुंदरलाल शर्मा का नाम इतिहास के पन्नो में स्वर्णिय अक्षरों में अंकित है। "छत्तीसगढ़ के गाँधी" के नाम से प्रसिद्ध पं. सुंदरलाल शर्मा ने 1906 के बंग–भंग आंदोलन के दौरान एक सक्रिय और जुझारू कार्यकर्ता के रूप में कार्य करना आरंभ किया तथा जीवनपर्यन्त पीड़ित मानवता की सेवा में संलग्न रहे। छत्तीसगढ़ की तत्कालिन सामाजिक व्यवस्था का उन्होनें घोर विरोध किया, जो भेदभाव पर आधारित थी। समाज के निम्न एवं दलित वर्गो के अधिकारों की लड़ाई में वे उनके साथ थे, जिसके कारण उन्हें अपने ही सवर्ण समुदाय के विरोध का सामना करना पड़ा। यह उल्लेखनीय है कि पंडित सुंदरलाल शर्मा ने अछूतोद्धार तथा अछूतों की सेवा का कार्य राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से पहले आरंभ कर दिया था। गाँधी जी ने उनके इस कार्य की बहुत प्रशंसा की तथा उन्हें अपना गुरू कहा था इसीलिए पं. सुंदरलाल शर्मा को "छत्तीसगढ़ के गाँधी" की उपमा दी गई। शर्मा जी अछूतोद्धार को राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु आवश्यक मानते थे। उन्होंने रायपुर में सतनामी आश्रम की स्थापना की, गोहत्या के विरोध में सन् 1916 में आंदोलन चलाया। वे मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश के समर्थक थे। अपने नैतिक समर्थन के बल पर उन्होने राजिम के मंदिर में हरिजन प्रवेश को उस युग में संभव कर दिखाया।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़, राजिम, आंदोलन, पंडित सुंदरलाल शर्मा, सत्याग्रह, गाँधी.

शोध पत्र का उद्देश्य

शोधार्थी के इस शोध पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के गांधी – पं. सुंदरलाल शर्मा के कार्यो का अध्ययन करना है।

शोध प्रविधि

अपने इस शोध पत्र हेतु शोधार्थी ने अभिलेखागारिय, ऐतिहासिक एवं अवलोकन शोध प्रविधियों का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो प्रकार के स्रोतों से मदद ली गई है। विजय से संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, जर्नल्स, तत्कालिन समाचार पत्रों, शोध प्रबंधो का अध्ययन भी किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

1. छत्तीसगढ़ का आधार स्तंभ–पं.सुंदरलाल शर्मा[1] नामक पुस्तक में बारह विद्वानों के लेख संकलित हैं जो पं. सुंदरलाल शर्मा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस पुस्तक के अनेक अंशो को उद्धृत किया है। यह पुस्तक पं. सुंदरलाल शर्मा के लगभग सभी पक्षों एवं पहलूओं को छूती है।
2. 'छत्तीसगढ़ के गाँधी–पं. सुंदरलाल'[2] में 24 विद्वानों के आलेख संकलित है जिनमें पं. सुंदरलाल शर्मा की जीवन यात्रा के हर पड़ाव के विषय में लिखा गया है।
3. ''छत्तीसगढ़ के सामाजिक, राजनीतिक संचेतना के विकास में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान–एक ऐतिहासिक विश्लेषण''[3] में लेखक ने पंडित जी के विषय में बहुत अधिक नहीं लिखा है।
4. ''छत्तीसगढ़ में महिलाओं की दशा–एक ऐतिहासिक विश्लेषण[4] में लेखक ने एक समाज सुधारक के रूप में पंडित सुंदरलाल शर्मा के कार्यो की समीक्षा की है।

प्रस्तावना

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित सुंदरलाल शर्मा, छत्तीसगढ़ में जनजागरण तथा सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। 21 दिसंबर 1881 ई. को राजिम के निकट महानदी के तट पर बसे चंद्रसूर में इनका जन्म हुआ।[5] पिता का नाम जियालाल शर्मा एवं माता का नाम देवमती देवी था। पिताजी समृद्ध माल–गुजार थे, जो कांकेर रियासत में वकीली का कार्य करते थे। पंडित जी किशोरावस्था में ही साहित्य तथा सामाजिक कार्य में रूचि लेने लगे थे। राजिम पाठशाला में मात्र प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की, तत्पश्चात् घर में अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, मराठी, उड़िया, भाषाओं का अध्ययन किया।[6]

अल्पायु में ही शर्मा जी का विवाह मुनगीबेल के पंकज तिवारी के यहाँ बोधनी देवी से संपन्न हुआ। पंडित शर्मा के दो लड़के व पाँच लड़कियाँ हुई जिनका नाम क्रमशः नीलमणी, विद्याभूषण, रामकुंवर, केसरबाई, सरोजनी बाई, शीलाबाई थे।[7]

छत्तीसगढ़ के महान सपूत सुंदरलाल शर्मा का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे छत्तीसगढ़ी काव्य के प्रवर्तक थे तो हिंदी के महत्वपूर्ण रचनाकार भी थे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अनन्य महासेनानी थे तो समाज में सुधार के लिए जीवन अर्पण करने वाले महानायक।[8]

प्रो. आभा आर. पाल[9] ने लिखा है– ''छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूतों में सुंदरलाल शर्मा का नाम अग्रणी है। उनके कार्यक्षेत्र का मुख्यालय राजिम था परंतु उन्होने समूचे छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व किया। वे छत्तीसगढ़ के राजनीतिक चेतना के अग्रदूत थे। राजनीतिक जागरण का कारण सामाजिक आंदोलन की पृष्ठभूमि में होता है। इस गूढ़ तथ्य को समझने वाले पं. सुंदरलाल शर्मा बीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधारों के भी प्रणेता माने जाते हैं। इस शताब्दी के प्रारंभ में उन्होंने छत्तीसगढ़ में सामाजिक सुधारों और राष्ट्रवाद की नींव रखी। तिलक युगीन नेताओं का प्रभाव पं. सुंदरलाल शर्मा पर गहरा पड़ा था। केसरी और मराठा के नियमित पाठक पं. सुंदरलाल शर्मा में किशोरावस्था से ही राजनीतिक चेतना का प्रस्फुटन हो चुका था। पीपुल टीचर्स ऐसोसिएशन, कवि समाज, छत्तीसगढ़ बाल समाज जैसी राष्ट्रवादी संस्थाएँ भी इस अंचल के युवा वर्ग को राष्ट्रीयता की ओर प्रेरित कर रही थीं।[10]

सन् 1905 में राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादी विचारधारा प्रखर थी, ऐसे ही समय में आपका राजनीति में प्रवेश

हुआ और बंग भंग विरोधी आंदोलन में पंडित जी कूद पड़े। सन् 1906 में स्वदेशी आंदोलन के तहत शर्मा ने रायपुर, राजिम, धमतरी और महासमुंद में अपने साथी नारायण राव मेघा वाले के साथ मिलकर स्वदेशी दुकाने खोली, परंतु आर्थिक क्षति के कारण 1911 में उसकी भरपाई के लिए अपने पैतृत गाँव चमसूर को बेचना पड़ा।[11]

पंडित जी ने 1907 में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में नारायण राव मेघावाले के साथ भाग लिया, जहाँ उग्रवादियों और उदारवादियों के बीच (मतभेद सामने आए जिसे सूरत फूट कहा जाता है) हाथापाई के दौरान बाल गंगाधर तिलक ने विरोधियों के बीच घिर जाने से उन्हें घेरे से बाहर निकाला था। इसके पश्चात् वे तिलक के राजनीतिक स्पंदन बने रहे।[12]

सन् 1916–17 में जब महात्मा गाँधी बिहार प्रांत के चंपारन के किसानों के सत्याग्रह का अभूतपूर्व नेतृत्व कर रहे थे, तब पंडित जी सिहावा के दुर्गम वन एवं कंदराओं में पहुँचकर वहाँ के आदिवादिसियों को संगठित कर जंगल विभाग तथा पुलिस के शोषण एवं दमन चक्र का विरोध कर रहे थ। सन् 1920 में छत्तीसगढ़ में गाँधी जी को पहली बार लाने का श्रेय स्व. पं. सुदरलाल शर्मा को है। इसके लिए उन्होंने लाहौर, पटना और काशी की यात्राएँ की तथा बापू को अंततोगत्वा इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे इस भूमि की गरीबी और शोषण का दर्शन करें तथा जन–मानस को असहयोग आंदोलन के लिए प्रेरित करें।[13] इस समय पं. शर्मा गाँधी जी को लाने 02 दिसंबर 1920 को कलकत्ता गए थे तथा धमतरी तहसील के कण्डेल गाँव के नहर सत्याग्रह का पूर्ण परिचय कराकर धमतरी लाने में सफल रहे। श्री रेशम लाल जांगड़े[14] में भी लिखा है कि पं. सुंदरलाल शर्मा राजनीति और पद लिप्सा से हमेशा दूर रहे। उनका एकमात्र उद्देश्य था–छत्तीसगढ़ में सामाजिक जाग्रति लाना इसलिए जब महात्मा गाँधी रायपुर आए थे तो उन्हें जानकारी दी गई कि पं. शर्मा ने छत्तीसगढ़ में छुआछुत की भावना को दूर कर सामाजिक समरसता का कार्य किया है। विशेषकर सतनामी भाईयों को जागृत किया है तब गाँधी जी के मुख से यह शब्द निकले– ''हरिजनों के उद्धार विषयक कार्य में पं. सुंदरलाल शर्मा राजिम वाले मेरे से दो वर्ष बड़े हैं जिन्होंने देश के महत्वपूर्ण कार्य को मेरे इस मिशन के पूर्व सम्पादित कर संचालित करने में एक आदर्श उपस्थित किया।[15]

सन् 1920 में असहयोग आंदोलन के प्रथम सत्याग्रही के रूप में जो पाँच व्यक्ति रायपुर से जेल गए थे, उनमें से एक पं. सुंदरलाल शर्मा थे। आंदोलन को सुचारू रूप से चलाने के लिए नागपुर में उन्होंने सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। मार्च, 1923 में शर्मा जी जेल से छूटकर जब राजिम आए तो वहाँ के लोगों द्वारा उनका अभूतपूर्व स्वागत किया।[16] अब पंडित जी झंडा सत्याग्रह (नागपुर) में संलग्न हो गए, लेकिन अंग्रेजी शासन ने सत्याग्रहियों के रेल पर सवार होने पर प्रतिबंध लगा दिया, तब सत्याग्रही सैंकड़ों की संख्या में पैदल ही चल पड़े। 1923 में पं. सुंदरलाल शर्मा और नारायण राव मेघावाले के नेतृत्व में 100 स्वयं सेवकों का जत्था काकीनाड़ा कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए रवाना हुआ। 700 मील पैदल यात्रा करके यह दल काकीनाड़ा पहुंचा। पंडित जी के साथ नारायण राव मेघावाले ने आदिवासी अंचल में गाँधीजी के आंदोलन का जमकर प्रचार किया।[17]

पंडित जी ने जनवरी 1922 में वन विभाग की मनमानी के विरोध में सिहावा जंगल सत्याग्रह आरंभ किया। निस्तार के लिए जंगल से जलाऊ लकड़ी काटने का कार्यक्रम बनाया गया। अतः शासन द्वारा गाँववालों (नगरी और आसपास के गाँव) पर सामूहिक जुर्माना किया गय जिसे चुकाने से उन्होने इंकार कर दिया। ऐसे में सत्याग्रह के नेता पंडित जी एवं नारायण राव को बंदी बनाया गया। पंडित सुंदरलाल शर्मा (जिन्हे एक वर्ष कारावास सजा) ने जेल में भी ब्रिटिश शासन का विरोध जारी रखते सरकार की नीतियों एवं दमन कार्यो को ''कृष्ण जन्म स्थान'' समाचार पत्र नाम से एक हस्तलिखित पत्र निकालना आरंभ किया।[18]

सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय वे कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में भाग लेने गए तथा धमतरी लौटकर स्वतंत्रता दिवस मनाने की रूपरेखा तैयार की। 22 अगस्त 1930 को रूद्री जंगल सत्याग्रह में भी पंडित जी ने महत्वपूर्ण कार्यप्रणाली द्वारा सत्याग्रहियों का मार्गदर्शन किया व जेल गए।

पं. सुंदरलाल शर्मा के जीवन के दो लक्ष्य थे– एक देश को पराधीनता से मुक्त करवाना और दूसरा छत्तीसगढ़ की सर्वांगीण उन्नति करना। पं. जी चिंतनशील व्यक्ति थे। उन्होंने छ.ग. में सामाजिक न्याय पर आधारित सामाजिक

क्रांति का बीजारोपण किया। उन्होने माना कि ईश्वर ने सभी मानव को एक ही मिट्टी से बनाया है, अतः समाज के दलित वर्ग को भी सवर्णो की भांति धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त है, उनसे प्राकृतिक अधिकार कोई अन्य मानव नही छीन सकता। जल, जमीन और वायु की तरह मंदिर पर भी सभी का समान अधिकार है। सन् 1918 में सतनामियों को सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत धारण करवाने का कार्यक्रम सनसनीखेज था। मद्यनिषेध और मांसाहार (गोहत्या) के खिलाफ भी उनका आंदोलन सफल रहा। राजिम के राजीवलोचन मंदिर में कहारों का प्रवेश भी इसी समय करवाया गया(1918)। 1918 में ही मुंगेली में सतनामी समाज का विराट सम्मेलन आयोजित करवाकर समाज में व्याप्त विषमता को खंडित करने का प्रयत्न भी किया। रायपुर में उन्होंने 1924 में सतनामी आश्रम भी स्थापित किया।[19]

पद्मश्री महादेव प्रसाद पांडे के अनुसार, छत्तीसगढ़ क्षेत्र गौरवन्वित है कि पं. सुंदरलाल शर्मा को खान अब्दुल गफ्फार खाँ 'सीमांत गाँधी' की तरह 'छत्तीसगढ़ के गाँधी' के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी को छत्तीसगढ़ लाने का कार्य उन्हीं के द्वारा कंडेल नहर सत्याग्रह (1920) में दिशा निर्देशन हेतु किया गया था। गाँधीजी ने भी कहा था– ''इस क्षेत्र में सुंदरलाल शर्मा जैसे प्रतिभावान, आदर्शो के लिये समर्पित व्यक्तित्व हैं, उस अंचल को कौन पिछड़ा कह सकता है।'' उनकी कर्म कीर्ति गाथा के कारण ही उनकी जन्मस्थली राजिम में महात्मा गाँधी 1933 में आए।[20] स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सूरज प्रसाद सक्सेना कहते हैं[21] कि पं. सुंदरलाल शर्मा एक उच्च कोटि के राष्ट्रभक्त, समाज–सुधारक, कवि हृदय साहित्यकार, कुशल चित्रकार, बुद्धिजीवी और सत्य–अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने राजिम में 1934–35 में आंग्ल वर्नाक्यूलन मिडिल स्कूल खोला, जहाँ पर अंग्रेजी का एक विषय अनिवार्य होता था।

डॉ. सविता मिश्रा[22] के अनुसार पं. सुंदरलाल शर्मा छत्तीसगढ़ी के आदि कवि हैं। उन्होंने ही छत्तीसगढ़ी में सर्वप्रथम ग्रंथ रचना की। 1906 ई. में उनकी अमरकृति ''छत्तीसगढ़ी दानलीला'', प्रकाशित हुई जो छत्तीसगढ़ी का प्रथम प्रबंध काव्य है जिसमें छत्तीसगढ़ी ग्राम्य संस्कृति पर आधारित कृष्ण चरित्र का सुंदर वर्णन किया गया है। इसी प्रकार रामकथा को लेकर उन्होने ''छत्तीसगढ़ी रामायण'' का सृजन किया।[23] सन् 1898 अर्थात् 17 वर्ष की आयु से ही शर्मा जी की कविता प्रकाशित होने लगी। पं. सुंदरलाल शर्मा की कृतियों की संख्या चौबीस बताई जाती है जिनमें प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रंथ शामिल है– राजीव प्रेम पीयूष, राजिम क्षेत्र महात्म्य, काव्यामृत वर्षिणि, विश्वनाथ की जीवनी, छत्तीसगढ़ी रामायण, छत्तीसगढ़ी दानलीला, प्रहलाद चरित नाटक, प्रलाप पदावली, श्री रघुराज गुणकीर्तन, ध्रुव चरित्र आख्यान, ब्राम्हण गीतावली, करूणा पच्चीसी, कृष्ण जन्म आख्यान, कंस वंध, स्फुट पद्य संग्रह, सीता परिणय, विक्रम शशिकला, पार्वती परिणय, विक्टोरिया वियोग, सच्चा सरदार, एडवर्ड राज्याभिषेक, बूढ़वा मंगल, स्वीकृति भजन संग्रह, सतनामी पुराण प्रमुख हैं।[24]

केयूर भूषण[25] के अनुसार, पं. सुंदरलाल शर्मा स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी योद्धा तो थे ही, अंचल के वैज्ञानिक विकास के भी अगुआ थे। कृषि में रोपा खेती का प्रारंभ वे ही किए। प्रथम राइस मिल की स्थापना वे ही किए। उनके त्याग की पराकाष्ठा तो इसी से प्रकट होती है कि उनके चौबीस गाँव की खेती व जमींदारी राष्ट्रीय आजादी के आंदोलन में समाप्त हो गई।

अपने अंतिम समय में भी सुसंस्कृत और संपन्न छ.ग. देखना चाहते थे इसलिए उन्होने ''दुलरूवा'' नामक हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन किया। लगातार परिश्रम का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा– 28 दिसंबर 1940 को छत्तीसगढ़ ने कर्मठ स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, पत्रकार, साहित्यकार के रूप में अपना तन मन धन सर्वस्व न्यौछावर करने वाला योद्धा खो दिया।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता आंदोलन, समाज सुधार आंदोलन, और साहित्य सेवा – तीनों एक साथ पूरी समग्रता के साथ करने वाले तपस्वियों में पं. संदरलाल शर्मा अग्रणी रहे। वे राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संचेतना के संवाहक थे। छत्तीसगढ का हित चिंतन उनका सहज भाव था। वे एक कुशल चित्रकार, कोमल हृदय कवि व उग्र विचारक, साहित्यकार थे। वे सही मायने में वे मानवतावादी, छत्तीसगढ के युगदृष्टा एवं महापुरूष थे, जिन्होने

मजदूरों, किसानों, सदियों से शोषित समाज को उत्थान, सामाजिक समानता तथा न्याय की दृष्टि से जाग्रत किया। कंडेल नहर सत्याग्रह, जंगल, सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, स्वराज जागृति, सविनय अवज्ञा आंदोलन में उनकी भूमिका ऐतिहासिक रही। पं. सुदरलाल शर्मा ने स्वयं को किसी भी पद से हमेशा मुक्त रखा एवं कृषि कार्य करते हुए जीवन के अंतिम क्षणों में स्वयं को महानदी की घाटी की माटी में समर्पित कर दिया।

संदर्भ सूची

1. पांडे, महादेव प्रसाद; पाल, आभा आर.; गुप्ता, सुपर्ण सेन; दुबे, व्यास नारायण; तिवारी, जवाहर (2009) *छ. ग. का आधार स्तंभ पं. सुंदरलाल शर्मा,* पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर (छ.ग.)।
2. कर, चितरंजन (2004) *छ.ग. के गाँधीः पं. सुंदरलाल,* पं.रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर।
3. कोरी, अर्चना (2012) छ.ग. के सामाजिक, राजनीतिक संचेतना के विकास में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान एक ऐतिहासिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।
4. परिहार, कामती सिंह (2015) छ.ग. में महिलाओं की दशा, अप्रकाशित शोध प्रबंध छत्तीसगढ़ शास. वि. यादव तामस्कर स्व. स्ना. महाविद्यालय, दुर्ग।
5. छत्तीसगढ संदर्भ (2017) जनसंपर्क संचानालय, रायपुर, पृ. 450।
6. चौबे, रश्मि (2011) *राष्ट्रीय चेतना के विकास मे छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का योगदान प. सुंदर लाल शर्मा के विशेष संदर्भ में,* शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, पृ. 123–124।
7. वही।
8. त्रिवेदी, सुशील (2017) *छत्तीसगढ़ के साहित्याकार,* समग्र छत्तीसगढ़, राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 669।
9. पाल, आभा. आर (2009) पं. सुंदरलाल शर्माः राजनीति और समाज के दर्पण में, छ.ग. का आधार स्तंभ पं. सुंदर लाल शर्मा, कुल सचिव पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर, पृ. 09।
10. शुक्ल, प्रयागदत्त (1960) *क्रांति के चरण,* समाज दर्शन, जबलपुर, पृ. 44–45।
11. कोरी, अर्चना (2012) छत्तीसगढ़ के सामाजिक, राजनीतिक संचेतना के विकास में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान एक ऐतिहासिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पृ. 41।
12. वहीं।
13. मिश्रा, ललित (2009) छत्तीसगढ़ी गाँधी पं. सुंदरलाल शर्मा, छत्तीसगढ़ का आधार स्तंभ पं. सुदरलाल शर्मा, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि, रायपुर, पृ. 19।
14. जाँगड़े, रेशमलाल (2009) *मेरे प्रेरणास्रोत पं. सुंदरलाल शर्मा, छत्तीसगढ़ का आधार स्तंभ पं. सुंदरलाल शर्मा,* कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 45।
15. तिवारी, प्रतिमा (2009) *पं. सुंदरलाल शर्माः व्यक्तित्व एवं कृतित्व,* छ.ग. का आधार स्तंभ, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 35।
16. वही, पृ. 39।
17. पांडेय, त्रिभुवन (2005) *छत्तीसगढ़ के गाँधी पं.सुंदरलाल शर्मा और धमतरी,* जनसंपर्क संचालनाय, छत्तीसगढ़ शासन, पृ. 60।
18. पाल, आभा आर, पूर्वोक्त, पृ. 12।

19. वही, पृ. 15।

20. पांडे, महादेव प्रसाद (2009) *छत्तीसगढ़ के गाँधी पं.सुंदरलाल शर्मा और धमतरी,* छ.ग. का आधार स्तंभ, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 06।

21. कोरी, अर्चना (2009) *स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सूरज प्रसाद सक्सेना जी का संस्मरण,* छ.ग. का आधार स्तंभ, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 46।

22. मिश्रा, सविता (2009) *छ.ग. के गाँधी सुंदरलाल शर्मा,* छ.ग. का आधार स्तंभ, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 48–49।

23. दुबे, गोधूलि (2009) *छ.ग. के स्वप्नदर्शीः पं. सुंदरलाल शर्मा,* छ.ग. का आधार स्तंभ, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 42।

24. तिवारी, प्रतिमा, पूर्वोक्त, पृ. 35।

25. भूषण, केयूर (2009) *राष्ट्रीय जागरण के प्रणेता पं. सुंदरलाल शर्मा, पं. सुंदरलाल शर्माः व्यक्तित्व एवं कृतित्व,* छ.ग. का आधार स्तंभ, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 60।

****